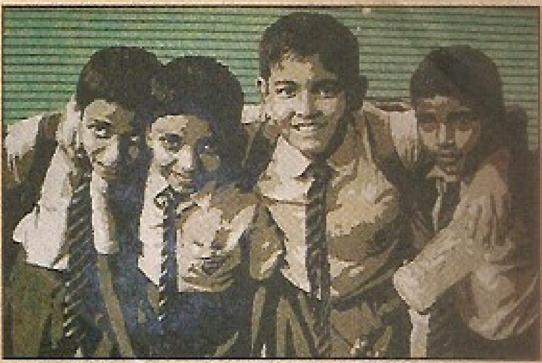

सभ्यता और आधुनिकता के बिखरे बिम्ब

कलादीर्घा की चार दीवारें और उन पर लगी हुई 12 कलाकारों की विभिन्न कलाकृतियां। कलाकृतियों में भारतीय सभ्यता व आधुनिक समाज के विभिन्न रंग बिखरे हुए हैं। इन रंगों में कहीं पर बचपन झलक रहा है तो कहीं पर समाज व कुदरत के नजारे। हम बात कर रहे हैं त्रिवेणी कला संगम में लगी कला प्रदर्शनी 'फेथ ऑफ शैडो' की। 3 सितंबर तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में 12 चित्रकारों को अपने हुनर को दिखाने का मौका मिला है। हर चित्रकार ने अपने विचारों को कैनवास पर बड़ी लगन से उकेरा है। चित्रकारों में शामिल हैं प्रशांत, कविता, विपुल, संजय पात्रा, मौसमी बिस्वास, अनिल गोस्वामी,

प्रतीक सागर, सुजीत मलिक और सुबोध कुमार।

हर चित्रकार आज की भाग-दौड़ और अफरातफरी भरी जिंदगी की कल्पनाओं में जकड़ा नजर आता है। चित्रकारों के अनुसार सफलता की होड़ में आम व्यक्ति करीब आने के बजाय एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की चेष्टा कर रहा है। जिससे समाज में गलाकाट प्रतिस्पर्धा की भावना घर करती जा रही है। यही नहीं, छोटी-छोटी बातों में भी वैचारिक मतभेद पैदा हो रहे हैं। बुद्धिजीवी मानते हैं कि यह विकास नहीं, हमारे अंत की कहानी है जिसे हम खुद अपने हाथों से लिख रहे हैं। चित्रकारों ने समाज के संघर्ष व इनसानों के इस बिखराव को रंगों और रेखाओं के माध्यम से कैनवास पर उकेरा है। प्रदर्शनी में चित्रकार प्रशांत ने समाज में तेजी से आते बदलाव को बहुत सुलझे ढंग से पेश किया है। इस बारे में उनका कहना है कि वह अपने आस-पास जो भी देखते हैं उनमें से कुछ अक्स धुंधला जाते हैं और कुछ संवेदनशील होकर कैनवास पर उभर आते हैं। सार्वजनिक रूप से जब समस्याओं की अभिव्यक्ति की जाती है तो वह जिम्मेदारी का सबब भी बन जाते हैं। उस जिम्मेदारी की भावना को वह हमेशा ध्यान में रखते हुए काम करते हैं। उन्होंने अपने चित्रों में परिवार के बिखरते लोग, शिक्षा के दबाव को झेलते बच्चे आदि का चित्रण किया है।

दिव्यशिखा